**Business Standard – Hindi - April 08, 2013**

# सीएलपी संयंत्र एक हफ्ते से बंद

**कात्या नायडू**
मुंबई, 8 अप्रैल

चाइना लाइट ऐंड पावर (सीएलपी) इंडिया का 665 मेगावाट वाला गैस आधारित बिजली संयंत्र पिछले एक सप्ताह से पूरी तरह बंद है। दूसरे बिजली संयंत्र की तरह इसे रिलायंस इंडस्ट्रीज की तरफ से संचालित कृष्णा-गोदावरी बेसिन ने गैस मिल रहा था, जो पूरी तरह बंद हो गया है। गैस के स्रोत के तौर पर पिछले तीन साल से रिलायंस गैस की भागीदारी महत्वपूर्ण रही है। कंपनी गुजरात स्टेट पेट्रोलियम कॉरपोरेशन से भी गैस ले रही है। इसके अलावा कुल ईंधन का करीब छठा हिस्सा केयर्न इंडिया की तरफ से हासिल होता है।

कंपनी का बंद पड़ा संयंत्र गुजरात के भरूच में है और एलएनजी टर्मिनल तक इसकी आसान पहुंच है। लेकिन एलएनजी की ऊंची कीमत इसका विकल्प नहीं है क्योंकि इसकी वजह से उत्पादित बिजली खरीदारों के लिए काफी महंगी हो जाएगी। सीएलपी इंडिया के प्रबंध निदेशक राजीव मिश्रा ने कहा, 'अगर हमें कीमतों

गैस के अभाव में बंद पड़ा 655 मेगावॉट का यह संयंत्र

में बढ़ोतरी का भार डालना है तो हमें इसके लिए मंजूरी लेनी होगी। गुजरात बिजली के आधिक्य वाला राज्य है और यहां सस्ते विकल्प मौजूद हैं।' ज्यादा गैस के आवंटन के लिए कंपनी फिलहाल केंद्र सरकार से बातचीत कर रही है। इसके अलावा कंपनी अल्पावधि वाले उचित विकल्पों की भी तलाश कर रही है। मिश्रा ने कहा, 'यह मसला हालांकि गंभीर है और सीएलपी जैसे उत्पादकों के लिए सक्रियता के साथ बहुत कुछ करने के लिए भी नहीं है। हमें उम्मीद है कि केजी डी-6 में रिलायंस के प्रस्तावित पूंजीगत खर्च से अगले कुछ सालों में स्थिति सुधरेगी।'

कंपनी इसी संयंत्र के पास 1000 मेगावाट और जोड़ने की योजना बना रही थी। लेकिन अब यह योजना ठंडे बस्ते की ओर बढ़ चली है। सिर्फ गैस की वजह से ही कंपनी का पारंपरिक ऊर्जा उत्पादन नहीं घट रहा है। कोयले की आपूर्ति भी बहुत अच्छी नहीं है।

मिश्रा ने कहा, झज्जर (हरियाणा) में 1320 मेगावाट की कोयला आधारित संयंत्र में भी कुल कोयले की जरूरत का सिर्फ 40-45 फीसदी ही मिल पा रहा है। दो इकाईयों में से एक का ही संचालन हो रहा है। इस स्थिति का स्पष्ट तौर पर पारंपरिक बिजली योजना पर असर पड़ा है। हॉन्ग-कॉन्ग की यह बिजली कंपनी कुछ चुनिंदे विदेशी निवेशकों में एक है जो बिजली क्षेत्र में है। कंपनी की योजना अगले दो साल में पारंपरिक ऊर्जा क्षमता को युक्तिसंगत बनाने की है। मिश्रा ने कहा, पारंपरिक बिजली क्षेत्र में स्पष्ट तौर पर मंदी है।

पारंपरिक ऊर्जा के मामले में उत्साह के अभाव के बावजूद कंपनी पवन ऊर्जा के मामले में आक्रामक बने रहना चाहती है। कंपनी के पास 970 मेगावाट का पवन ऊर्जा संयंत्र है और कंपनी हर साल इसमें 200-250 मेगावाट की बढ़ोतरी जारी रखेगी।